

शो संकटास्त्रोत्रं संपूर्णम् ॥ ॐ श्री उल्कादेव्यै नमः ॥ वशिष्ठोवाच ॥ कथं दुः
 खे निमग्नाति किमर्थं मलिनः मुखम् ॥ ममाग्रैकथा तानुः खं पायं वह्निमा
 स्युतम् ॥ १ ॥ हरिचन्दु उवाच ॥ राजभ्रष्टो महाजातो धननाशादिकन्नतः ॥
 यन्नादीनां कथं लाभेयुर्तिमुरागवदप्रभो ॥ २ ॥ वशिष्ठोवाच ॥ शृणु राज
 न्प्रवक्ष्यामि उल्कास्त्रोत्रं विपत्यहम् ॥ रोगशोकादिहरणं सर्वसौभाग्य
 वर्धनम् ॥ १ ॥ धारणा कुरु भो शिष्यो उल्कादेव्यै प्रपूजनम् ॥ स्तोत्रं च पद्य

॥ ६ ॥

तां वत्सविपत्तिनाशयत्यसम् ॥ २ ॥ ॐ अस्य श्री उल्का देवास्तोत्रमंत्रस्य इ-
त्यपि अयिरुदसमाख्या तावहती छन्द उच्यते ॥ ३ ॥ श्री उल्का देवी वी-
जे ह्रीं शक्तिं चूर्णं च कीलकम् ॥ ममार्थे दुःखशान्त्यर्थे विनियोगप्रकीर्ति-
ना ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं उल्के ममरागनाशयनाशयभंजयभंजयस्वाहा ॥ उल्का दे-
वी महारोपी अस्त्री मूर्ति विनाशिनी ॥ नन्दमाता विशालाक्षी योगिनी ग-
णचारिणी ॥ ५ ॥ नारिणी सर्व दुःखानां नाशिनी रियातिनी ॥ तानदात्री मे-

पु

॥ रामः ॥
॥ ६ ॥

क्षकरी सिद्धिदा सौख्यदायथा ॥ ६ ॥ इष्टहन्त्री महामाया सर्वारिष्टप्रणा-
शिनी ॥ भवदुःखहरि सौख्याः इष्टग्रहविमर्दिनी ॥ ७ ॥ छाया रूपधरी पू-
र्णा पद्मा पद्मावती भवा ॥ बदवारूपिणी गुह्या गुह्यशक्ति परपरा ॥ ८ ॥ वा-
गीश्वरी वरभद्रा भवानी भूतनाशिनी ॥ भूतदारोगहन्ती व ॐ कारवीजरू-
पिणी ॥ ९ ॥ अपर्यागिरिजा काली श्मशानलयवासिनी ॥ शिवप्रियाम-
हा चण्डी चण्डेश्वरि सुपूजिता ॥ १० ॥ इत्येतत्परमं गुह्यं उल्का देवास्त-

वैश्वैः॥ आधित्याधिहरं पुराणं त्रिबुल्लोकेषु इन्द्रभम्॥ ११॥ जगत्तलसा-
यतो दद्यात्तदद्यात् सर्वस्वदायिने॥ अभक्ताय निन्दकाय क्रूराय भेषधा-
रिणे॥ १२॥ गुरुभक्ताय शास्त्रासदेदीभक्तिपराय च॥ षष्ठ्यं च स्तोत्रं राजं च
सत्त्वं सत्त्वं न संशयः॥ १३॥ इति श्री मेरुतंत्रे कैलाशा आगम उल्का देव्या-
स्तोत्रं संपूर्णम्॥ शुभम्॥

॥ रामः ॥
॥ ७ ॥